डॉ. जॉन ओसवाल्ट, राजा, सत्र 20, भाग 2

2 राजा 6-8, भाग 2

© 2024 जॉन ओसवाल्ट और टेड हिल्डेब्रांट

और अब हम उद्धार के बारे में जानना चाहते हैं। इस तरह के धर्मशास्त्रीय वर्णन में पूछे जाने वाले दिलचस्प सवालों में से एक अनुपात का सवाल है। कुछ घटनाओं को बहुत ज़्यादा जगह क्यों दी गई है और दूसरों को शायद ही कोई जगह दी गई है? कुछ आयतों में साल बीत जाते हैं, और दूसरी तरफ़, दो अध्यायों का बेहतर हिस्सा बेन-हदद द्वारा सामरिया की घेराबंदी और फिर सामरिया के उद्धार की कहानी को दिया गया है।

ऐसा क्यों है? खैर, मैं आपको बताता हूँ, मुझे नहीं पता। बाइबल हमारे लिए इस सवाल का जवाब नहीं देती है, लेकिन यह हमें इसके बारे में सोचने से नहीं रोकता है। और वास्तव में, हमें उन सवालों के बारे में सोचना चाहिए जिनका बाइबल सीधे जवाब नहीं दे सकती है।

इस कहानी पर इतना ध्यान क्यों दिया जा रहा है? मैं आपको सुझाव देता हूँ, और जब हम स्वर्ग में पहुँचेंगे तो हम जान जाएँगे कि मैं सही हूँ या नहीं, लेकिन मैं आपको सुझाव देता हूँ कि इस विशेष घटना पर इतना ध्यान दिए जाने का कारण यहोवा पर भरोसा करने के मुद्दे हैं, वह मेरे लिए अच्छा करना चाहता है। राजा ने इस पर विश्वास नहीं किया। समाधान के लिए यहोवा की ओर मुड़ते हुए, वे ऐसा नहीं करना चाहते थे।

जब यहोवा असंभव बातें कहता है तो उस पर विश्वास करना और फिर सबसे असंभावित लोगों के माध्यम से परमेश्वर द्वारा अपना कार्य करने का चमत्कार। मुझे लगता है कि परमेश्वर इस कहानी में उन सबकों को रेखांकित करना चाहता है और इस तरह इसे इतने शानदार विवरण में बताता है। तो, हमें बताया गया कि चार आदमी एक संक्रामक त्वचा रोग से पीड़ित थे।

अब, मैंने पहले भी कहा है, फिर से, यह लगभग निश्चित रूप से हैनसेन की बीमारी नहीं है, जिसे हम आज कुष्ठ रोग कहते हैं। वास्तव में, शास्त्रों के आधार पर, क्योंकि हैनसेन की बीमारी एक भयानक त्वचा रोग है जिसके कारण तंत्रिका अंत मर जाते हैं और आप अपने शरीर के अंग, अपनी उंगलियाँ, अपने पैर की उंगलियाँ, अपनी नाक, अपने कान खो देते हैं - भयानक, भयानक बात।

लेकिन हमारी जानकारी के अनुसार, यह एक अपेक्षाकृत हाल ही की बीमारी है जो दूसरी शताब्दी ई. में मिस्र में सामने आई थी। लेकिन यह किसी तरह की संक्रामक त्वचा की बीमारी है, और इसलिए ये लोग निर्वासित हैं। अब, जैसा कि मैंने हैंडआउट में बताया है, इस समय इज़राइली शहरों में फाटक, अगर आप इसे ऊपर से नीचे की ओर देखते हैं, तो इस तरह की योजना में बनाए गए थे।

इनमें से हर एक जगह पर दरवाज़े, गेट और लकड़ी के भारी दरवाज़े थे, जिन पर रोक लगी हुई थी। इसलिए, यह एक तरह से फेलसेफ डील है। अगर दुश्मन एक को तोड़ देता है, तो उसके पास अभी भी दो और हैं।

और यहाँ इन खाड़ियों में आत्मघाती सैनिक थे जो हमला करने के लिए तैयार थे। यह चीज़ छत से ढकी हुई थी, और छत में छेद थे, हत्या के छेद, जिनसे आप इन दुश्मन सैनिकों पर तीर चला सकते थे जो अंदर घुस आए थे। इसलिए, हमें बताया गया कि ये लोग, ये चार लोग जिन्हें बाहर निकाल दिया गया था, शहर के प्रवेश द्वार पर थे।

अब, मुझे संदेह है कि, वास्तव में, वे उन गार्ड रूम में से एक के अंदर हैं। मुझे लगता है कि अगर वे वास्तव में गेटवे के बाहर होते, तो सीरियाई लोग उन्हें पहले ही मार चुके होते। इसलिए, मुझे लगता है कि वे उन गार्ड रूम में से एक में शरण लिए हुए हैं।

और वे कहते हैं कि यह पागलपन है। अगर हम यहाँ रहे, तो हम मर जाएँगे। हम भूख से मर जाएँगे।

दूसरी ओर, कौन जानता है? शायद सीरियाई लोग हम पर दया कर लें। मेरा मतलब है, हम हार नहीं सकते। अगर हम यहाँ रहेंगे तो हम मर जाएँगे, और शायद अगर हम वहाँ जाएँगे तो हम जीवित रहेंगे।

तो, चलिए चलते हैं - समुदाय में सबसे कम संभावना वाले लोग। मैं एक पल के लिए भी नहीं मानता कि यह एक दुर्घटना है क्योंकि यही बाइबल की कहानी है।

भगवान असंभावित लोगों का उपयोग करता है। ओह, उन लोगों के लिए भगवान का शुक्र है जो प्रतिभाशाली हैं। उन लोगों के लिए भगवान का शुक्र है जो प्रतिभाशाली हैं।

भगवान का शुक्र है कि जो लोग सक्षम हैं। लेकिन बार-बार उनकी प्रतिभा, उनकी प्रतिभा, उनका आत्मविश्वास और उनकी योग्यता उनके रास्ते में आ जाती है। यह किसने किया? अच्छा, मैंने किया, बेवकूफ़।

इसलिए, बाइबल कहती है कि बहुत से महान लोग, बहुत से बुद्धिमान लोग नहीं चुने जाते। क्यों? क्योंकि परमेश्वर उन्हें पसंद नहीं करता। नहीं, वह उनसे प्यार करता है।

वह उन लोगों का इस्तेमाल करना पसंद करेगा। लेकिन बार-बार, वह ऐसा नहीं कर सकता क्योंकि वे रास्ते में बाधा डालते हैं। लेकिन जो लोग सक्षम नहीं हैं, जिनके पास इन लोगों की तरह खोने के लिए कुछ नहीं है, मैं खुद को भगवान पर क्यों न छोड़ दूँ? इससे बुरा कुछ नहीं हो सकता, और यह बेहतर हो सकता है।

और भगवान कहते हैं कि यह काफी है। क्या आप भी उनमें से एक हैं? क्या आप भी उनमें से एक हैं जो कहते हैं कि भगवान मेरा इस्तेमाल नहीं कर सकते? मैं बुद्धिमान नहीं हूँ, मैं होशियार नहीं हूँ, मैं प्रतिभाशाली नहीं हूँ। तो क्या हुआ? भगवान आपका इस्तेमाल कर सकते हैं।

परमेश्वर आपके माध्यम से अपने महान उद्देश्यों को पूरा कर सकता है। कई साल पहले, मैंने एक कार्टून देखा था, यह दो फ्रेम में था। पहले फ्रेम में, यह बड़ा आदमी, बहुत बड़ा आदमी डेस्क के सामने झुका हुआ है और डेस्क के पीछे बैठे आदमी को धमका रहा है।

खैर, डेस्क के पीछे वाला आदमी वास्तव में इस बड़े आदमी से थोड़ा लंबा है। और डेस्क के पीछे वाला आदमी कह रहा है, हाँ, आप और कौन? दूसरे फ्रेम में, आप डेस्क के दूसरी तरफ आते हैं, और आप देखते हैं कि डेस्क के पीछे वाला आदमी उन दो दरारों में खड़ा है जिन्हें उसने बाहर निकाला है। हाँ, आप और भगवान बहुमत हैं।

क्या आप उसे ऐसा करने देंगे? क्या आप उसे यीशु की कहानी की तरह अपनी दो मछलियाँ और पाँच रोटियाँ इस्तेमाल करने देंगे? भगवान को ऐसा करना पसंद है। और मुझे पूरा भरोसा है कि यहाँ यही हो रहा है। इसलिए ये लोग बाहर जाते हैं, और उन्हें कुछ आश्चर्यजनक चीज़ मिलती है।

सीरियाई शिविर खाली है। और हमें बताया गया है, पाँचवीं आयत, जब वे शिविर के किनारे पहुँचे, क्योंकि यहोवा ने अरामियों को रथों और घोड़ों और एक बड़ी सेना की आवाज़ सुनाई थी, इसलिए उन्होंने एक दूसरे से कहा, देखो, इस्राएल के राजा ने हिती और मिस्र के राजाओं को हम पर हमला करने के लिए किराए पर लिया है। इसलिए, वे उठकर शाम को भाग गए और अपने तंबू और अपने घोड़े और गधे छोड़ दिए।

वे शिविर को वैसे ही छोड़कर भाग गए जैसे वह था। अब, हम इसे देखकर कह सकते हैं कि, यह तो एक तरह से काल्पनिक बात है। मेरा मतलब है, ऐसा नहीं होता।

हाँ, ऐसा होता है। हाँ, ऐसा होता है। हमने 2020 में पीछे मुड़कर देखा है कि कैसे एक मिनट में भीड़ बन सकती है।

और एक बार जब वे बन जाते हैं, तो वे बहुत ही अनियंत्रित हो जाते हैं। लोग भीड़ में ऐसे काम करते हैं जो वे खुद करने के बारे में कभी नहीं सोच सकते। इसलिए, सीरियाई सेना में भीड़ मनोविज्ञान के काम करने का विचार बिलकुल भी दूर की कौड़ी नहीं है।

और यही हुआ। तो, यहाँ पूरा शिविर खाली है। और ये लोग कहते हैं, वाह।

वे एक तंबू में घुस गए और खाने-पीने लगे। यह आठवीं आयत है। फिर उन्होंने चाँदी, सोना और कपड़े लिए और जाकर उन्हें छिपा दिया।

वे वापस लौटे और दूसरे तंबू में घुस गए, उसमें से कुछ चीज़ें निकालीं और उन्हें छिपा दिया। ओह, वाह। लेकिन फिर उन्होंने कहा, एक मिनट रुको, एक मिनट रुको।

हम जो कर रहे हैं वह सही नहीं है। यह अच्छी खबर का दिन है, और हम इसे अपने तक ही सीमित रख रहे हैं। खैर, यह एक परोपकारी प्रेरणा है, है न? लेकिन फिर देखिए कि वे और क्या कहते हैं।

अगर हम दिन के उजाले तक इंतज़ार करेंगे, तो सज़ा हम पर हावी हो जाएगी। एक और मकसद है। अरे भाई, अगर वे सुबह शहर से बाहर निकलें और देखें कि कैप खाली है और हम यहाँ नशे में धुत हैं, तो यह हमारे लिए अच्छा नहीं होगा।

चलो, अभी चलें और राजमहल में इसकी सूचना दें। हाँ।

मिश्रित उद्देश्य। क्या आपने कभी ऐसा अनुभव किया है? हम कुछ काम बहुत अच्छे उद्देश्यों के लिए करते हैं, और कुछ अन्य काम स्वार्थी उद्देश्यों के लिए करते हैं। इस कहानी से मैं जो कहना चाहता हूँ, वह यह है कि सवाल यह है कि क्या आपने सही काम किया? एक बार फिर, हमारा दुश्मन, जिसे सही मायने में आरोप लगाने वाला कहा जाता है, हमारे साथ ऐसा कर सकता है।

हम कुछ करते हैं, कुछ ऐसा जो सही है। और वह कहता है, ओह, हाँ, हाँ, लेकिन तुमने यह सब गलत इरादों से किया। और हम कहते हैं, ओह, वाह।

और हम निराश हो जाते हैं, खुद पर ही निराश हो जाते हैं। लेकिन हमने सही काम किया। यही भगवान की चिंता है।

वह चाहता है कि हम निस्वार्थता से प्रेरित हों, बिल्कुल। लेकिन वह चाहता है कि हम सही काम करें। और अगर आप सही काम इसलिए करते हैं क्योंकि आपको गलत काम करते हुए पकड़े जाने का डर है, तो आपने सही काम किया।

और हमारे समाज में, हमें ऐसे लोगों की ज़रूरत है जो कहें, मैं सही काम करने जा रहा हूँ। दुखद बात यह है कि हम सही कारणों से सही काम करते थे। मैं गति सीमा का पालन क्यों करूँ? क्योंकि यह सही काम है।

और मैं, जो ईश्वर से प्रेम करता हूँ, जिसने कानून बनाए और सरकारें बनाईं, मैं सही काम करना चाहता हूँ। अब, आप देखिए, दुनिया में इतने पुलिसकर्मी नहीं हैं जो हमें सही काम करने के लिए मजबूर कर सकें, अगर ईश्वर की आज्ञा मानने की आंतरिक प्रेरणा न हो। हम दुनिया भर में यही देखते हैं।

यही बात अमेरिका को अलग बनाती है। मुझे परवाह नहीं कि लोग कितना कहना चाहते हैं, ठीक है, संस्थापक पिता वास्तव में ईसाई नहीं थे, और संयुक्त राज्य अमेरिका में अधिकांश लोग वास्तव में ईसाई नहीं थे, और वगैरह, वगैरह। सच तो यह है कि पिछले 200 सालों से अधिकांश अमेरिकी एक आंतरिक प्रेरणा से प्रेरित रहे हैं: मैं वही करने जा रहा हूँ जो सही है।

यह कहाँ से आया? यह यहीं से आया; यहीं से आया। ओह, हो सकता है कि वे यीशु को व्यक्तिगत रूप से नहीं जानते हों। हो सकता है कि वे अच्छे चर्च जाने वाले न रहे हों, लेकिन उनके पास एक लंबा इतिहास है जो कहता है कि एक ईश्वर है, और ईश्वर ने इस दुनिया को बनाया है, और ईश्वर ने इस दुनिया को कुछ खास तरीकों से संचालित करने के लिए बनाया है, और ईश्वर उन लोगों को आशीर्वाद देता है जो अपने जीवन को उसके मानकों के अनुसार व्यवस्थित करते हैं।

अब, हम इसे जितनी तेजी से खो सकते हैं, खो रहे हैं। हम इसे नष्ट कर रहे हैं, इसे तोड़ रहे हैं। और मैं फिर से कहता हूँ, दुनिया में इतनी पुलिस नहीं है कि आपको कानून का पालन करवा सके, जब तक कि आपके अंदर कोई ऐसा आंतरिक उद्देश्य न हो जो आपको ऐसा करने के लिए सक्षम करे।

तो, इन लोगों के पास मिले-जुले उद्देश्य थे। अरे, यह ठीक नहीं है कि हम यहाँ बैठकर पेट भर खाना खाएँ, जबकि शहर में हर कोई भूख से मर रहा है, और हम पकड़े जाने की संभावना है। आपका उद्देश्य क्या है? आपको सही काम करने के लिए क्या प्रेरित करता है? इसलिए, वे गए और रिपोर्ट की।

अब, राजा की प्रतिक्रिया को फिर से देखो। फिर से देखो। मैं तुम्हें बताता हूँ कि अरामियों ने हमारे साथ क्या किया है।

यह श्लोक 12 है। वे जानते हैं कि हम भूखे हैं, इसलिए वे शिविर छोड़कर देहात में छिप गए हैं, यह सोचकर कि वे निश्चित रूप से बाहर आएँगे, फिर हम उन्हें जीवित पकड़ लेंगे और शहर में पहुँच जाएँगे। अब, यह असंभव नहीं है, लेकिन यह इतना दिलचस्प है कि वह एक बार भी नहीं कहता है, हे भगवान, क्या आपको लगता है कि यहोवा ने हमें बचा लिया है? नहीं।

उसके और ईश्वर के बीच के रिश्ते में यह दरार उसे एक पल के लिए भी यह विश्वास करने की अनुमति नहीं देगी कि ईश्वर, जिस पर कुछ लोगों ने भरोसा किया था, ने उन्हें मुक्ति दिलाई है। नहीं। नहीं, उसे विश्वास करना होगा।

ओह, यह एक चाल है। यह एक जाल है। और फिर, कहानी कुछ विस्तार से खेली जाती है।

कुछ लोग कहते हैं, ठीक है, हमारे पास कुछ घोड़े बचे हैं। यह एक ऐसा देश था जिसके पास करीब 2,000 रथ थे। हमारे पास कुछ घोड़े बचे हैं।

चलो पाँच घोड़े और दो रथ लेकर उन्हें बाहर भेजते हैं और देखते हैं क्या होता है। मुझे लगता है कि उन्हें राजा को ऐसा करने के लिए मनाना पड़ा। नहीं, नहीं, यह भयानक है।

यह निराशाजनक है। यह खत्म हो चुका है। नहीं, नहीं।

हम यहाँ बैठ कर मर सकते हैं क्योंकि भगवान ने ऐसा किया है, चलो कोशिश करते हैं। ठीक है, ठीक है, अगर आप जोर देते हैं। ओह, ओह, दिल से कितना फर्क पड़ता है जो कहता है, मैं एक ऐसे ईश्वर को जानता हूँ जो हमसे प्यार करता है, जो बड़ी मुश्किलों के बीच भी हमें बचाने के लिए दृढ़ संकल्पित है।

मुझे नहीं पता कि वह यह कैसे करेगा, लेकिन मुझे पता है कि वह ऐसा करेगा। और जब ऐसा होता है, तो देखिए, यह भगवान है। नहीं, नहीं।

नहीं, यह अरामी लोग हैं जो हमें फंसाने की कोशिश कर रहे हैं। आप क्या सोचते हैं? मैं क्या सोचता हूँ? विश्वास, भरोसा, उसके प्यार पर भरोसा, मेरी आत्मा और उद्धारकर्ता के बीच कुछ भी नहीं, जैसा कि पुराने गीत में कहा गया है। मैं यहीं रहना चाहता हूँ, क्या आप नहीं? अब, आशावादी और निराशावादी दोनों हैं।

अगर मेरी पत्नी यहाँ होती, तो वह आपको बताती कि मैं ज़्यादा निराशावादी हूँ। हमारे व्यक्तित्व में भिन्नताएँ हैं, लेकिन सूक्ष्म दृष्टिकोण यह है: मैं प्रभु को जानता हूँ, और मैं हमारे लिए उनके उद्देश्यों को जानता हूँ।

और मुझे उस पर भरोसा है कि वह हर चीज के बावजूद अपने अच्छे उद्देश्यों को पूरा करेगा। मुझे इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप जन्मजात निराशावादी हैं या जन्मजात आशावादी। यह रवैया आपका और मेरा रवैया हो सकता है।

और ऐसा ही हुआ। और यह मेरे लिए दिलचस्प है कि उस अंतिम घटना को कितना स्थान दिया गया है। राजा ने उस अधिकारी को, जिसके हाथ पर वह टिका हुआ था, गेट का प्रभारी बना दिया था।

हाँ। उन सभी भूखे लोगों को उस प्रवेश द्वार से बाहर आना पड़ा। वे सभी लोग कुचले जा रहे हैं।

यह आदमी किसी तरह भीड़ को नियंत्रित करने की कोशिश कर रहा है, और वे उसे कुचल देते हैं। अधिकारी ने कहा था, और वह इसे यहाँ श्लोक 19 में ठीक उसी तरह उद्धृत करता है, जैसा उसने श्लोक दो में कहा था। इसे इतनी सटीकता से क्यों दोहराया गया? एक बार फिर, मुझे लगता है कि लेखक एक बात कह रहा है।

भगवान के बारे में संदेहवादी बनो, और एक दिन ऐसा आएगा जब तुम्हारा संदेहवाद पूरी तरह से तुम्हारे पास वापस आएगा। यही हुआ। तुम इसे अपनी आँखों से देखोगे।

तुम वहाँ देखोगे। तुम यहाँ असीरियन शिविर को देखोगे, और तुम लोगों को एक बुशल गेहूँ लेकर उसे एक शेकेल में बेचने की कोशिश करते हुए देखोगे। तुम इसे देखोगे, लेकिन तुम्हें इसमें से कुछ भी नहीं मिलेगा।

हाँ-हाँ। आपका क्या विकल्प है? क्या आप मधुर और खुले और भरोसेमंद और साहसी बनने जा रहे हैं? क्या आप निंदक बनने जा रहे हैं? आह, अगर भगवान स्वर्ग की खिड़कियाँ खोल दें, तो ऐसा नहीं हो सकता। हाँ, वह ऐसा कर सकता है।

हाँ, वह ऐसा कर सकता है। इस पर विश्वास करें।